November '16 | December '16

Important

(1)
25/10/21
[illegible]

B.A. I Sem
Hindi Hons
मध्यकालीन
हिन्दी काव्य
Paper I

डॉ० अनामिका कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न :— अयोध्याकांड रामचरितमानस का हृदय है, स्पष्ट करें।

उत्तर :— आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने तुलसीदास के रामचरित मानस को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ काव्य स्वीकार किया है। शुक्ल जी के अनुसार श्रेष्ठ काव्य के निम्नलिखित उपादान होते हैं।

(1) श्रेष्ठ काव्य वह है जिसमें कवि की भावुकता का पूर्णतया से परिचय मिलता है, अर्थात् जीवन की विभिन्न परिस्थितियों और भाव दशाओं के साथ कवि के रागात्मक सामंजस्य का पूर्ण परिचय मिले।

(2) श्रेष्ठ काव्य में भाव व्यंजना और रस निष्पत्ति का उत्कर्ष होता है।

(3) प्रबंध काव्य मुक्तक या गीत से श्रेष्ठतर है क्योंकि प्रबंध में ही कवि अपनी प्रतिभा का पूर्ण परिचय दे सकता है। यह परिचय दृश्य योजना, घटना विकास, परिस्थिति निर्माण, चरित्र-चित्रण तथा भाव-व्यंजना के व्यापक सामंजस्य द्वारा मिलता है।

(4) प्रबंध काव्य के अन्तर्गत कथा-प्रसंग के बीच मार्मिक स्थलों की पहचान का परिचय काव्योत्कर्ष का विधायक है। कथा के मार्मिक स्थलों की पहचान करने वाला

क्रमशः —

B.A. I Part Hindi Hons Paper 1 — 25/10/21 — (2) क्रमशः:—

तुलसी, अयोध्याकांड

कवि उनका उपयोग हृदय व चरित्र आदि की व्यंजना के निमित्त करता है।

(5) चरित्र-चित्रण के माध्यम शील-निरूपण की कुशलता का परिचय भी काव्य के उत्कर्ष का सूचक है। शील-निरूपण कौशल प्रबंधकार ही कर सकता है।

उपर के कारण मानस में सामाजिक मान्यता के अयोध्याकांड को पूर्ण रूप से चरितार्थ करते हैं।

अयोध्याकांड के द्वारा तुलसी दास की भावुकता का पूर्ण परिचय मिलता है। इस कांड में परिस्थितियों और भाव दशाओं का जैसा विविध चित्रण देखने को मिलता है वैसा मानस के शेष काण्ड अंश में नहीं। अयोध्याकांड का प्रारम्भ राम के राज्याभिषेक के हर्षोल्लास से होता है फिर यह वातावरण हर्ष के केकयी - मंथरा कूट-व्यवहार के कारण विषाद और शोक में बदल जाता है राम - वनगमन, दशरथ - मरण, के उपरान्त कारुणिक प्रसंगों के बाद वन पथ में राम, लक्ष्मण, सीता के विविध भाव, ग्राम वधुटियों तथा निषाद का प्रसंग फिर चित्रकूट में राम-भरत का मिलन का दृश्य — ये सारे भाव और प्रसंग तुलसी की भावुकता के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इस प्रकार मैं स्पष्टतः कह सकता हूँ कि भावों या दृश्यों के वैविध्य उनका विस्तार की दृष्टि से ही नहीं गहराई की दृष्टि

क्रमशः:—